IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

कात्यायनी के काव्य में स्त्री-जीवन का यथार्थ और प्रतिरोध की चेतना

डॉ. कविता संदीप तळेकर
असिस्टंट प्रोफेसर
श्री पंचम खेमराज महाविद्यालय, सावंतवाडी
kavitat1216@gmali.com

शोध सारांश : *साहित्य के क्षेत्र में नब्बे के दशक के अस्मितावादी दौर की प्रमुख और सशक्त कवयित्री कात्यायनी अपने जुझारू, निर्भीक और साहसी व्यक्तित्व के साथ समाज के विविध मुद्दों पर गंभीरता और प्रतिबद्धता के साथ सक्रिय रही हैं। कात्यायनी ने अपनी कविताओं के माध्यम से न केवल समाज में उपेक्षित और शोषित नारी की स्थिति को मुखर स्वर दिया है, बल्कि समाज के अन्य वंचित एवं हाशिये पर पड़े समुदायों के प्रति भी गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त की है।*

मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित कात्यायनी ने अपनी रचनाओं में भ्रष्ट राजनीति पर भी तीखा प्रहार किया है। साथ ही, साहित्यिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्ट प्रवृत्तियों के विरोध में भी उनके स्वर अत्यंत प्रखर और स्पष्ट दिखाई देते हैं। नारी जीवन के कोमल और मानवीय पक्ष जैसे वात्सल्य, प्रेम और संवेदनाओं को भी उन्होंने अपनी कविताओं में अत्यंत सजीवता और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। कात्यायनी की कविताएँ स्त्री के अस्तित्व, अस्मिता और स्वतंत्र पहचान के प्रश्न को केंद्र में रखती हैं। उनकी रचनाओं में स्त्री केवल करुणा या संवेदना का विषय नहीं है, बल्कि संघर्षशील, आत्मनिर्भर और परिवर्तन की वाहक शक्ति के रूप में उभरती है।'सात भाइयों के बीच चंपा' तथा 'हॉकी खेलती लड़कियाँ' जैसी कविताएँ स्त्री की जिजीविषा, आत्मसम्मान और स्वतंत्र अभिव्यक्ति का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। कात्यायनी की काव्य-दृष्टि मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है, जिसके कारण उनकी कविताओं में श्रमिक वर्ग, हाशिए पर स्थित समुदायों तथा सामाजिक न्याय के प्रश्न भी प्रमुखता से उभरते हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र में कात्यायनी की कविताओं के आधार पर स्त्री विमर्श और स्त्री संघर्ष के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कात्यायनी की कविताएँ स्त्री अस्मिता, सामाजिक समानता तथा मानवीय गरिमा की स्थापना की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और समकालीन हिंदी कविता को एक नई वैचारिक दिशा प्रदान करती हैं।

बीज शब्द – समकालीन हिंदी कविता, नारी विमर्श, स्त्री अस्मिता, पितृसत्ता, सामाजिक न्याय,स्त्री विमर्श, सामाजिक चेतना।

प्रस्तावना

हिंदी समकालीन कविता की सशक्त और विशिष्ट हस्ताक्षर कात्यायनी ने अपने निर्भीक और प्रखर स्वर के माध्यम से पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था की जड़ताओं को चुनौती देते हुए साहित्य जगत में एक विशिष्ट पहचान निर्मित की है। उन्होंने निडरता के साथ इस पुरुषसत्तात्मक दुर्ग के द्वार पर दस्तक देकर स्त्री अस्मिता, स्वतंत्रता और समानता के प्रश्न को केंद्र में स्थापित किया है। 'सात भाइयों के बीच चंपा', 'गार्गी', 'हॉकी खेलती लड़कियाँ' जैसी कविताओं के माध्यम से कात्यायनी यह स्पष्ट करती हैं कि आधुनिकता के इस दौर में भी स्त्री की स्थिति अनेक स्तरों पर दोयम बनी हुई है। कात्यायनी केवल एक विदुषी कवयित्री ही नहीं, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक चेतना से संपन्न एक सजग और प्रतिबद्ध व्यक्तित्व भी हैं, जो अन्याय, शोषण और असमानता के विरुद्ध निर्भीक स्वर में प्रतिरोध दर्ज कराती हैं। साहित्यिक और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

सामाजिक जीवन में व्याप्त अनाचार के विरुद्ध उनका स्वर अत्यंत मुखर और साहसपूर्ण है। उनकी कविताओं में निहित क्रांतिधर्मी चेतना को देखते हुए रेखा सेठी ने उन्हें "क्रांति चेतना की स्त्री-मशाल" की संज्ञा दी है।

कात्यायनी की काव्ययात्रा अनेक महत्वपूर्ण काव्य-संग्रहों के माध्यम से विकसित हुई है, जिनमें 'चेहरों पर आज आँच', 'सात भाइयों के बीच चंपा', 'इस पौरुषपूर्ण समय में', 'जादू नहीं कविता', 'राख अँधेरे की बारिश में' तथा 'फुटपाथ पर कुर्सी' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन काव्य-संग्रहों में उन्होंने स्त्री-जीवन की पीड़ा, संघर्ष, असमानता और प्रतिरोध को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। साथ ही वे लोकतांत्रिक मूल्यों, नागरिक अधिकारों और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को भी अपनी कविता का केंद्रीय विषय बनाती हैं। सदियों से उपेक्षित और शोषित स्त्री को समानता का अधिकार दिलाने तथा उसे एक स्वतंत्र, स्वाभिमानी और आधुनिक नागरिक के रूप में स्थापित करने की उनकी प्रबल आकांक्षा उनकी कविताओं में अत्यंत सशक्त रूप से अभिव्यक्त होती है।

मूल आलेख

कात्यायनी का प्रथम काव्य संकलन 'सात भाइयों के बीच चंपा' है जिसके अभी तक तीन संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इससे ही इन कविताओं की लोकप्रियता का अंदाजा लगाया जा सकता हैं। उक्त संकलन में संग्रहित 'सात भाइयों के बीच चंपा' और 'हॉकी खेलती लड़कियां' पिछले कुछ दशकों की सर्वाधिक लोकप्रिय व चर्चित हिंदी कविताओं में से एक हैं, जिन्हें विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रमों में भी शामिल किया गया है। औरत की परंपरागत छवि को प्रस्तुत करती 'हॉकी खेलती लड़कियां' उक्त संकलन की प्रतिनिधि कविता है। इस कविता में कात्यायनी ने तमाम विसंगतियों से दूर, दुनिया से बेखबर लड़की की उन्मुक्त छवि को प्रस्तुत किया है।

" खेल रहीं हैं हॉकी। कोई डर नहीं।
और स्टिक लटकाए हाथों में एक भीषण जंग से निपटने की तैयारी करती लड़कियों लौटेंगी घर...।"[1]

प्रखर स्त्री चेतना कात्यायनी की कविताओं की विशेषता है। अपनी विभिन्न कविताओं में समाज में क्रांतिकारी बदलाव हेतु व्यवस्था के तनावपूर्ण संबंधों की शिनाख्त कर समता आधारित एक नई खूबसूरत व्यवस्था की स्थापना हेतु वर्तमान स्थिति पर करारी चोट करती आज के वर्तमान समय में स्त्री में अपनी स्थिति के प्रति बढ़ती हुई चेतना पर उनकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार है-" स्त्री हूं, अज्ञान के अंधकार में भटकने को पैदा हुई- यह जानने में ही उम्र का एक बड़ा हिस्सा खत्म हो गया। पशु नहीं थी फिर पशु नहीं थी फिर भी या
बन नहीं पाई जो अपरिचित रह जाती ज्ञान से....।"[2]

प्रस्तुत पंक्तियों में स्त्री में अपनी अज्ञानता का बोध उपस्थित है। वह जानती है कि वह पशु नहीं है जीता जागता मनुष्य है जिसमें बुद्धि तत्व है किंतु ज्ञान के अभाव के कारण वह अंधकार में जी रही है। स्त्री में स्वयं में अज्ञानता का अभाव उसकी नई चेतना का सूचक है जो उसे इस अंधकार से बाहर निकलने के लिए प्रेरित करता है। कात्यायनी अपने काव्य के तीव्र कटाक्षों के माध्यम से स्त्री में इसी चेतना को जागृत कर उसे आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती हैं।

स्त्री अस्मिता के अलावा, लोकतंत्र में उत्पीड़न के अधिकार सांस्कृतिक साम्राज्यवाद व बाजारवाद की समस्याएं, भूमंडलीकरण, विचारधारा का अंत जैसे विषयों के साथ-साथ मानवता से जुड़े प्रश्नों पर भी कात्यायनी यथार्थवादी दृष्टि

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

रखती है। पूंजीवाद के प्रभाव से मानवता में हुए क्रमिक हास को कात्यायनी अपनी कविताओं में रेखांकित करती है। बाजार आधारित व्यवस्था ने कि जिस प्रकार स्त्री को उपभोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुत कर उसकी अवहेलना की है। कात्यायनी अपनी कविताओं में निरंतर उसे उजागर कर समाज में एक नई चेतना स्थापित कर रही हैं। उन्होंने अपने देश की सीमाओं को पार करते हुए समाजवाद की सीमा से आगे बढ़कर वैश्विक स्तर पर समाजवाद की परिकल्पना को विस्तारित करते हुए हिंदी साहित्य जगत को समृद्ध किया हैं।

"घराना अलग, अलापचारी अलग
लयकारी अलग, आघात की जाति और वजन अलग।
फिर भी यह एक ही बंदिश
आ रही है अलग-अलग रागों में
नए-नए रूप धरकर..।"[3]

स्त्री चाहे किसी भी घर या खानदान की हो, सम्यक सत्ता कोई भी हो किंतु हर समय में हर स्थान पर स्त्री के ऊपर लगाई लगाई गई बंदिशे लगभग समान ही है।उक्त पंक्तियां के माध्यम से स्त्री समस्या के सार्वभौमिकीकरण को इंगित उपरोक्त पंक्तियों सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं। वह आगे लिखती है-

"मुक्त करो, मुक्त करो मुझे
इस बंदिश से,
अन्यथा मैं मर जाऊंगी।
जग को चकित कर जाऊंगी...।"[4]

स्त्रियों में जागृत चेतना की द्योतक उक्त पंक्तियां समाज के ठेकेदारों से सार्वभौमिक स्तर पर मुक्ति की गुहार लगा रही है। आज की स्त्री जागृत है उसे अपने अधिकारों का ज्ञान है वह समाज के इन ठेकेदारों से उन्हें बंदिशें से मुक्त करने का आवाहन करती है कात्यायनी की कविताओं में सर्वत्र प्राप्त स्त्री मुक्ति की यह चेतना हमारे समाज के सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करती है।

संवेदनशील कात्यायनी ने अपने काव्य में बड़े ही पुरजोर शब्दों में इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई है। हालांकि स्त्री समस्या के ऊपर कई तरह के प्रश्न उठे हैं आंदोलन भी हुए हैं और बहस अभी भी जारी है। कात्यायनी का मानना है कि जब से यह समाज वर्गों में बनता है औरत यौन शोषण का शिकार हुई है वह नारी के शोषण के रूप बदलने के साथ-साथ ही उत्पीड़न का यह स्वरूप भी बदलता चला गया है। सामंती समाज में जहां औरत की स्थिति एक शापीत की तरह है अथवा उपभोग की एक वस्तु मात्र... यह वंश चलाने की एक जरूरी साधन के रूप में थोड़ी बहुत इज्जत प्राप्त थी उसकी कोई अपनी कोई स्वतंत्र अस्मिता अथवा पहचान नहीं थी। आज भी उसकी स्थिति में कुछ विशेष सुधार नहीं हुआ है। वर्तमान समय में तो उसे एक कमोडिटी अथवा आर्थिक स्वतंत्रता के नाम पर निम्न श्रेणी की मजदूर भी बना दिया गया है। कात्यायनी का कहना है कि आज के इस पूंजीवादी समाज में औरतों के लिए विशेष पेशे बनाए गए हैं जो कि पुरुष के मुकाबले स्त्री के आर्थिक शोषण उसका और भी अधिक उत्पीड़न जिसमें यौन उत्पीड़न व यौन शोषण भी शामिल है। इसी संदर्भ में कात्यायनी की निम्नांकित पंक्तियां उल्लेखनीय है-

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

"दिल्ली में जी.बी. रोड पर
एक स्त्री/ ग्राहक पटा रही है।
पलामू के एक कस्बे में
नीम उजाले में एक नीम हकीम
एक स्त्री पर गर्भपात की हर तरकीब आजमा रहा है।
बाड़मेर में एक शिशु के शव पर/ विलाप कर रही है एक स्त्री..।"[5]

इस वर्ग आधारित समाज में आर्थिक तंगी के चलते औरत जुआ घरों, क्लब, बार वेश्यालय अथवा स्ट्राइप्ड जॉइंट्स इत्यादि में अपने शरीर की नुमाइश कर आर्थिक तंगी को पूरा करती है। यौन शोषण का आलम तो यह है कि कुछ देशों में तो सेक्स -पर्यटन बाकायदा एक धंधा बना हुआ है जिसके लिए युवा लड़कियों को प्रशिक्षण देने हेतु स्कूल खोले गए हैं। स्वयं कात्यायनी लिखती हैं-" रूस और पूर्वी यूरोप के फुटपाथों पर घटिया अश्लील पत्रिकाओं की बाढ़ आ गई है..... सस्ते पेशेवर मॉडलों के अतिरिक्त छात्राएं और गृहणियों भी ऐसे चित्र अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए नाम मात्र के डॉलर, पॉन्ड, फ्रेंक या मार्क लेकर खिंचवा लेती हैं। विदेशी छात्रों और पर्यटकों को वहां बहुत सस्ती दरों पर अपनी शारीरिक भूख और हवस मिटाने के लिए औरत का गोश्त मिल जाता है..।"[6] शोषण का आधार कात्यायनी औरत की सामाजिक स्थिति को मानती हैं और यह सामाजिक स्थिति ही उसके आर्थिक शोषण का कारण भी होती है। सर्वमान्य तथ्य है कि संपूर्ण विश्व में औरत का श्रम पुरुष के श्रम से सस्ता है। स्वयं कात्यायनी के शब्दों में"औरत कस्टम पूरी दुनिया में मर्द के श्रम से सस्ता है पूरी दुनिया के कुल श्रम का दो तिहाई भाग औरतें करती हैं जबकि उन्हें कल श्रम का एक तिहाई भाग ही मिलता है। मजदूर औरत के अतिरिक्त श्रम का दोहन मजदूर पुरुष से अधिक है। घर के भीतर की स्थिति भी यही है...।"[7]

मार्क्सवादी चेतना की पक्षधर कात्यायनी के काव्य में वर्गीय संदर्भ अति प्रबल है। कात्यायनी समाज को दो वर्गों शोषक व शोषित में बँटा हुआ पाती हैं। शोषक वह वर्ग है जिसने समाज पर अपना वर्चस्व स्थापित किया हुआ है। यह वर्ग समाज का अधिपति अथवा पुरोधा है। सामंती वर्ग वह परिवार तथा समाज की पुरुषवादी सत्ता इसी श्रेणी में आते हैं। यह वर्ग समाज के कमजोर व निम्न वर्ग के शोषण व उत्पीड़न के लिए उत्तरदाई है। दलित आदिवासी स्त्री अथवा मजदूर इसी शोषित वर्ग का हिस्सा है। जिनकी कमजोर अथवा निम्न स्थिति के कारण इस उच्च सामती वर्ग द्वारा उनका परिवार अथवा समाज के स्तर पर दैहिक, आर्थिक शोषण किया जाता है। इस कमजोर वर्ग की अपनी कोई अस्मिता नहीं है। अपनी सभी इच्छाओं कामनाओं का दहन कर वर्ग उच्च वर्ग के हाथों की कठपुतली बना हुआ है। अस्मिता वादी विमर्श के चलते हालांकि इस वर्ग में चेतना का विकास हो रहा है फल स्वरुप यह वर्ग अपनी पहचान के संकट से गुजर रहा है। कात्यायनी की सहानुभूति इसी शोषित वर्ग से है, जिसमें स्त्री चेतना प्रमुख है। कात्यायनी के काव्य में इस वर्ग के समर्थन में प्रतिरोध की आवाज बुलंद है। बड़े ही आक्रामक अंदाज में वह शोषण के विरुद्ध जोरदार आवाज़ उठाते हुए, क्रांति का बिगुल बजाती हैं। 'इस स्त्री से डरो' कविता की निम्नांकित पंक्तियों में कात्यायनी इस पुरुष सत्ता को चुनौती देते हुए कहती हैं-

"यह स्त्री/ सब कुछ जानती है
पिंजरे के बारे में/ जाल के बारे में
यंत्रणागृहों के बारे में
रहस्यमय हैं इस स्त्री की उलटबांसियों/ इन्हें समझो इस स्त्री से डरो.) "[8]

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

कात्यायनी ने उक्त पंक्तियां के माध्यम से स्त्री को कमजोर समझ कर उसका शोषण करने वाली इस पुरुष सत्ता को ललकारा है। स्त्री, पुरुष वर्ग की इन यंत्रणाओं को बखूबी समझती है। वह अपने संस्कारों की सीमा में रहकर शांतिपूर्वक इन सभी अत्याचारों को सह रही है किंतु जब कभी भी वह अपने स्त्रीत्व पर आ गई तो वह साक्षात दुर्गा है। उसके आगे कोई भी असुर नहीं टिक सकता। इस स्त्री का सम्मान करो। उसकी अवहेलना करने से डरो। वह जीवनदात्रि है, सहनशील है, कोमल है, किंतु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि वह कमज़ोर अथवा निम्न है। स्त्री साक्षात देवी का रूप है, वह दैवीय गुर्णो से परिपूर्ण संपूर्ण नारी है, शक्ति का पुंज है। शक्ति के प्रचंड वेग में सब कुछ तबाह करने की असीम ताकत भी इस स्त्री में है इसलिए इस स्त्री की सहनशीलता की और परीक्षा न लेते हुए उसका सम्मान करने की गुहार कात्यायनी ने समाज से लगाई है।

कात्यायनी की कविताएं समकालीन समय में नारी की त्रासद पूर्ण स्थितियों को उनकी समग्रता में प्रस्तुत करती हैं। इन कविताओं में कवयित्री की निजी अनुभूतियां भी शामिल है। लिंग आधारित इस समाज में नारी को पुरुष के बराबर दर्जा नहीं दिया गया है। उसे हमेशा पुरुष से नीचे रखा गया है। सत्ता द्वारा नारी को बंदिशों में रखकर उसके ऊपर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए हैं। इस पुरुष प्रधान सत्ता में नारी को अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं मिला है। सामाजिक बंदिशो में एक स्त्री की उन्मुक्त आकांक्षाओं को किस प्रकार दमित करती हैं, हॉकी खेलती लड़कियों का रूपक बांधकर बड़ी ही खूबसूरती से कात्यायनी अपनी प्रसिद्ध कविता' हॉकी खेलती लड़कियां' में स्त्री की व्यवस्था की कहानी कहकर समाज की विकृत मानसिकता को झंकृत करती हैं। वहीं' सात भाइयों के बीच चंपा' जैसी कविता के माध्यम से विपरीत परिस्थितियों में घिरी स्त्री की अदम्म जिजीविषा की कहानी कहकर स्त्री में नया आत्मविश्वास भरती है। कात्यायनी सामाजिक बेड़ियो में जकड़ी हुई इस नारी की विवशता, उसकी अकुलाहट को अच्छी तरह समझती है। उसे अपनी कविताओं में व्यक्त कर समाज में एक नई चेतना जाग्रत करती हैं। इसके साथ ही नारी को अपनी अस्मिता का बोध करा कर उसे अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया हैं।

कात्यायनी ने स्त्री संबंधी अपनी सभी कविताओं में इस पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की पीड़ा को विविध आयामों में प्रस्तुत किया है। कात्यायनी की कविताओं में नारी शोषण के विभिन्न रूप उजागर होते है-

"तुम्हारे पुष्पक विमान में यात्रा करते / महाजनों की सेवा के लिए, तुम्हारी सजी-धजी दुकानों के संभ्रांत ग्राहकों को प्रसन्न करने के लिए मैं अनुपयोगी हो चुकी हूँ। वह चपलता नहीं रही पैरों में कि विद्युत गति से थिरककर नृत्यशालाओं में/ तृप्त कर सकूँ उनकी सौंदर्य- पिपासा...।"[9]

नारी के शारीरिक शोषण के यह बिंब समकालीन समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितना प्राचीन समय में हुआ करते थे। फिल्मी दुनिया हो या सोशल मीडिया का अद्यतन जमाना अथवा कॉरपोरेट दुनिया सभी स्थानों पर नारी शोषण जारी है। आज के इस उपभोक्तावादी समय में बाजारवाद के तहत विज्ञापन की दुनिया में नारी का शोषण हो रहा है। आजकल तो स्कूल जैसी आदर्श संस्थानों में भी बच्चियों को नहीं बख्शा जाता। स्पोर्टस के नाम पर यौन शोषण होना आम बात है।कात्यायनी की कविताओं में स्त्री के दुखों की अभिव्यक्ति के साथ-साथ उनकी मुक्ति का संकल्प भी है। कात्यायनी की कविताओं की यही विशेषता उसे विशिष्ट बनाती है। अपनी कविता में जब कात्यायनी कहती हैं.

"पोर-पोर से मैं/ अनुभव करना चाहती हूं। जागने का आनंद...।"[10]

यह एक सशक्त स्त्री के अंर्तमन की आवाज है। इस स्त्री को अपनी स्थिति का भान है यह सजग स्त्री सभी बंदिशों को तोड़ समाज में अपना बराबरी का हक चाहती है.. अपना स्वतंत्र अस्तित्व चाहती है.. बिना किसी दबाव के बराबरी के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

हक के साथ जीवन जीने का आनंद लेना चाहती है। कात्यायनी की यह पंक्तियां स्त्री सशक्तिकरण का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। अब अंधेरे से उजाले की ओर आने की स्त्री की यह उत्कंठा समाज में बदलाव की सूचक है। कात्यायनी की कविताओं में उपस्थित यह स्त्री चेतना स्त्री को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक कर उसकी प्राप्ति हेतु संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। "स्त्री कविता केवल स्त्री के सुख दुख की कविता नहीं है। स्वतंत्र देश की स्वतंत्र नागरिक के रूप में उसकी सामाजिक, राजनीतिक प्रतिबद्धता को भी गंभीरता से पढ़ा जाना चाहिए। कात्यायनी की कविता ऐसा ही संकल्प है। स्त्री मुक्ति के रास्ते स्त्री के नागरिक अधिकारों की मार्फत ही संभव हो सकेंगे। कात्यायनी ने अपनी कविता में स्त्री सवालों को उनकी व्यापक सामाजिक उपस्थिति के संदर्भ में प्रस्तुत किया है यही उनकी कविता की ताकत है।"[11] स्त्री सशक्तिकरण की सार्थक अभिव्यक्ति कात्यायनी की कविताओं में मिलती है।

कात्यायनी की कविताओं की स्त्री 'आगत की आहट' के सपनों से आशान्वित है-

"आगम की आहट होंगे सपने
हमारी नजर की रोशनी होगे
कठिन जीवन की कोख में हम पालेंगे इन्हें,
यादों से मथ- मथ कर निकालेंगे...।"[12]

कात्यायनी की कविताएं बदलते समय में स्त्रीत्व को नई भूमिका ग्रहण करते हुए देखती हैं। स्वयं कात्यायनी के शब्दों में "स्त्रियों की पूर्ण मुक्ति तो पूंजी के पाश से सामाजिक मुक्ति के बाद ही संभव है, लेकिन मैं उस स्त्री को देख रही हूं जो चूल्हे चौखट और पारिवारिक दासता की बेड़ियों को झटक कर मुक्तिकामी संघर्षरत लोगों की कतारों में अपनी जगह बना रही है, जो जड़ीभूत मान्यताओं, रूढ़ियों और संस्कारों से मुक्त होकर स्त्री को पुर्नपरिभाषित कर रही है।"[13] समाज में बदलते परिवेश में इस नई स्त्री की भूमिका से सम्भवतः जेंडर न्यूट्रल' समाज की स्थापना संभव है ऐसी स्थापना के माध्यम से निश्चित ही समाज को एक नई ऊंचाई तक ले जाया जा सकता है।

कात्यायनी की काव्य संवेदना में नारी जीवन के प्रेम, संघर्ष और उसके त्रासदपूर्ण जीवन के विविध अनुभव शामिल है। इसके साथ ही कात्यायनी अपनी कविताओं में सर्वहारा वर्ग की पीड़ा को भी अभिव्यक्ति मिलती है। कात्यायनी की कविताओं का मूल विषय व्यक्ति व उसकी व्यवस्था के द्वंद्वपूर्ण संबंध है वह चाहे इस पौरूषपूर्ण समय में स्त्री की स्थिति हो या इस पूंजीवादी समाज में सर्वहारा वर्ग...। समाज के वंचित वर्ग को अपना अधिकार दिलाने के लिए प्रतिबद्ध कात्यायनी न केवल स्त्री की दोयम स्थिति वरन् समाज के उन तमाम शोषित वंचित वर्ग के प्रति अपनी कविताओं में आवाज उठाकर मानवीय प्रतिबद्धता व्यक्त करती हैं। आज के इस आधुनिक लोकतांत्रिक युग में स्वाधीन व स्वायत्त नागरिक देखने की अभिलाषा उनके काव्य का प्राणबिंदु है।

कात्यायनी के काव्य में स्त्री संवेदना प्रबल है। उनकी कविताओं में स्त्री शोषण के विभिन्न चित्र उपस्थित हैं। अशिक्षा के कारण अज्ञानता के अंधेरे में जीती स्त्री बात-बात पर पुरुष से फटकार खाती है। उसका संपूर्ण जीवन रोते हुए बच्चे को दूध पिलाने, उनके पालन-पोषण, घर का चौका- बर्तन, सोते हुए अपने पुरुष को पंखा झलने अथवा पुरुष की वासनाओं की तृप्ति हेतु उपभोग की एक वस्तु के रूप में बिस्तर पर बिछ जाने में व्यतीत होता है। उसका अपना कोई स्वतंत्र वजूद नहीं.. कोई निजी इच्छा नहीं। मनु संहिता में व्यक्त स्त्री की स्थिति पर कटाक्ष करते हुए कात्यायनी अपने विचार इस प्रकार रखती हैं-

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

"नारी की रचना हुई मात्र वंश चलाने के लिए
जीवन को रचने के लिए
उन्होंने कहा चार हजार वर्षों पहले
नए समाज - विधान की रचना करते हुए।
पर वे भूल गए कि नहीं रचा जा सकता कुछ भी
बिना कुछ सोचे हुए...।"?[14]

स्पष्ट शब्दों में कात्यायनी कहती हैं कि स्त्री भी एक जीता-जागता इंसान है, जिसकी अपनी कुछ संवेदनाएं हैं.. अपनी अस्मिता है। वह बच्च्या जनने वाली या वंश चलाने वाली मात्र एक मशीन नहीं है, जैसा की मनु संहिता कहती है। स्त्री के पास जीवन रचने की अद्‌भुत शक्ति है। वह जीवनदात्री है। उसे भी सम्मान के साथ अपना जीवन जीने का अधिकार है। चीख-चीख कर यह प्रताड़ित स्त्री समाज से इन परंपरागत बेड़ियो से मुक्ति की गुहार लगा रही है।
कात्यायनी की कविताओं में स्त्री चेतना काफी प्रबल है। लिंग आधारित सामाजिक ढांचे में स्त्री की दोयम दर्जे की स्थिति उन्हें बेचैन करती है।

"हे ईश्वर!
मुझे ऐसी औरत क्यों नहीं दी
जिसका कुछ तो भला किया जा सकता!
यह औरत तो बस भात रॉध सकती है
और बच्चे जन सकती है
इसे भला कैसे मुक्त किया जा सकता है..?"[15]

कात्यायनी की कविताओं में स्त्री को सामाजिक प्रतिष्ठा उपलब्ध कराने व समाज में बराबरी का स्थान दिलाने की प्रतिबद्धता स्पष्ट झलकती है। वह चाहती है कि औरत खाना बनाने और बच्च्या पैदा करने की अपनी परंपरागत छवि से मुक्त होकर बराबरी के हक के साथ समाज में प्रतिष्ठित हो सके। यह तभी संभव है जब स्त्री अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर अपने हक की लड़ाई लड़े। "कात्यायनी की स्त्री दृष्टि, स्त्री को उसकी पराधीनता और दमन के सीमित संसार से बाहर निकलकर उसको लोकतांत्रिक चेतना के स्तर पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास करती है।"[16] कात्यायनी की कविताओं की स्त्री संवेदना स्त्री में अभूतपूर्व साहस भरकर उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सचेत करती है।
कात्यायनी की कविताओ में निहित स्त्री संवेदना में स्त्री मुक्ति की गुहार है।

"मुक्त करो, मुक्त करो मुझे
इस बंदिश से,
अन्यथा मैं मर जाऊंगी।
जग को चकित कर जाऊंगी।"[17]

स्त्री संवेदना के अतिरिक्त कात्यायनी की कविताओं में मार्क्सवादी चेतना भी प्रबल रूप में उपस्थित है। शोषितों व वंचितों के साथ कात्यायनी सहानुभूति रखती हैं। उनकी यह संवेदना पर्दा उठाने गिराने वाले की कविता, स्टेज लाइटिंग का काम

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

करने वाले की कविता, संकटग्रस्त आदमी की कविता, बुजुर्ग राहगीर की कविता, दुखी आदमी की कविता, सफाई पसंद आदमी की कविता इत्यादि कविताओं में प्रकट होती है।

निष्कर्ष

कात्यायनी की कविताएं नारी जीवन की विडंबनाओं को प्रस्तुत करती एक प्रतिबद्ध आवाज हैं। उनकी कविताओं में स्त्री जीवन की त्रासदी अवश्य उपस्थित है किंतु स्त्री के स्त्रीकरण की प्रक्रिया के भीषण दुख व विडंबनाओं का हा- हा कार नहीं है क्योंकि कात्यायनी अपनी कविताओं में स्त्री जीवन की सीमाओं के साथ-साथ उन संभावनाओं की भी तलाश करती चलती हैं जो कि समाज में स्त्री की सशक्त नारी के रूप में पहचान सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। स्त्री की असीम जिजीविषा की कहानी कहती उनकी प्रसिद्ध कविता 'सात भाइयों के बीच चंपा' एक ऐसा ही उदाहरण प्रस्तुत करती है।' हॉकी खेलती लड़कियों' कविता में हॉकी खेलती हुई स्वतंत्र लड़की का बिंब प्रस्तुत कर नारी स्वतंत्रता को मजबूती देती है। 'गार्गी' व 'नहीं हो सकता तेरा भला' जैसी कविताओं के माध्यम से कात्यायनी स्त्रियों को ज्ञान अर्जित कर सशक्त होने के लिए प्रेरित करती हैं ताकि वह अपने शोषण का प्रतिकार कर समाज में अपने लिए साम्माननीय स्थान सुनिश्चित कर सकें, सर उठाकर पूरे आत्मसम्मान के साथ जी सके। अपनी कविताओं के माध्यम से कात्यायनी सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन के द्वारा प्रगतिशील साहित्य की स्थापना को प्राप्त कर नारी विमर्श में अपना संपूर्ण योगदान दे रही है। कात्यायनी की कविता में स्त्री अपने घर की चार दिवारी से बाहर निकलकर पारिवारिक बेड़ियो को काटने के लिए कृत संकल्पित है। वह सामाजिक कुरीतियों, रुग्ण संस्कारों व परंपरागत दासता से मुक्त होकर अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाना चाहती है। कात्यायनी की स्त्री अपनी परंपरागत भूमिका से इंकार नहीं करती किंतु दासता उसे स्वीकार्य नहीं। कात्यायनी अपनी कविताओं में स्त्री के विकास की अनंत संभावनाएं देखती हैं और उनकी प्राप्ति के लिए कात्यायनी प्रतिबद्ध हैं। उनकी कविताओं में उपस्थित लोकतांत्रिक चेतना स्त्री जीवन के विडंबनाओ व उसके मुक्ति के स्वप्न के संबंध में समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को जागृत कर एक नई चेतना जागृत कर रहीं हैं। राजनीतिक- सामाजिक कार्यकर्ता और पत्रकारिता से जुड़े होने के कारण उनकी कविताओं में विद्रोह के स्वर बुलंद व कविताओं की धार पैनी है। कात्यायनी की कविताओं का यह आक्रामक अंदाज़ पाठकों की संवेदनाओं पर सीधा वार करता हैं। कात्यायनी की कविताओं में उपस्थित नारी सशक्तिकरण की दिशा में समाज को बदलने की तीव्र प्रतिबद्धता नारी विमर्श को नवीन आयाम देती हैं।

नारी शोषण के इन विभिन्न प्रकारों को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त कर कात्यायनी इन सामाजिक समस्याओं के प्रति समाज को जाग्रत करती हैं, ताकि लोगों की पुरुषवादी मानसिकता को बदला जा सके। स्त्री को समाज में सम्माननीय स्थान उपलब्ध हो सके। इस पौरुषपूर्ण समय में स्त्री की पीड़ा का सबसे बड़ा कारण भी यही है कि पुरुष द्वारा उसे घर की चारदीवारियों में कैद कर दिया गया है। 'औरत और घर', ' स्त्री या चरित्रम पुरुषस्य भाग्यम्', 'एक भूतपूर्व नगर वधू की दुर्गपति से प्रार्थना', 'एक समर्थ कविता की अति प्राचीन पांडुलिपि' इत्यादि कविताएं स्त्री शोषण के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करते हैं। कात्यायनी की कविताओं में समाज के दोहरे मापदंडों, स्त्री पर लगाए गए पारिवारिक बंदिशों तथा पितृसत्ता द्वारा किया जाने वाले शोषण पर प्रहार किया गया है। कात्यायनी की कविताएं स्त्री की स्वतंत्रता व उसके आत्माभिमान के लिए सामाजिक कुरीतियों पर सीधा प्रहार करती हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

संदर्भ सूची:

1. कात्यायनी- सात भाइयों के बीच चंपा (हॉकी खेलती लड़कियां); परिकल्पना प्रकाशन, लखनऊ; संस्मरण **2008**, पृष्ठ **26**
2. कात्यायनी -इस पोरुषपूर्ण समय में ; परिकल्पना प्रकाशन लखनऊ संस्करण **2008**, पृष्ठ **62**
3. वही, पृष्ठ **62**
4. वही, पृष्ठ **79**
5. कात्यायनी -इस पोरुषपूर्ण समय में; परिकल्पना प्रकाशन- लखनऊ, संस्करण **2008**, सितंबर **2019**, पृष्ठ **21**
6. कात्यायनी- दुर्ग द्वार पर दस्तक; परिकल्पना प्रकाशन- लखनऊ, प्रथम संस्करण **1997;2018**,पृष्ठ, **39**
7. वही, पृष्ठ **39**
8. कात्यायनी- सात भाइयों के बीच चंपा; परिकल्पना प्रकाशन- लखनऊ, संस्करण, **2008** पृष्ठ **15- 16**
9. कात्यायनी-इस पौरूषपूर्ण समय में; परिकल्पना प्रकाशन लखनऊ, प्रथम (परिकल्पना) संस्करण **2018**, प्रथम पुर्नमुद्रण **2019**, पृष्ठ, **66**
10. वही, पृष्ठ **77**
11. सेठी रेखा- स्त्री कविता- पहचान और द्वंद्व राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण **2019**, पृष्ठ**42**
12. कात्यायनी -जादू नहीं कविता; परिकल्पना प्रकाशन, लखनऊ प्रथम (परिकल्पना), संस्करण **2008**, पृष्ठ **97**
13. सेठी रेखा- 'स्त्री कविता- पहचान और द्वंद्व'; राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण **2019**, पृष्ठ **53**
14. कात्यायनी - सात भाइयों के बीच चंपा (वह रचती है जीवन और..); परिकल्पना प्रकाशन; लखनऊ, प्रथम (परिकल्पना) संस्करण **2008**, पृष्ठ **41**
15. कात्यायनी- सात भाइयों के बीच चंपा; परिकल्पना प्रकाशन; लखनऊ, प्रथम (परिकल्पना) संस्करण **2008**, पृष्ठ **36**
16. सेठी रेखा-स्त्री- कविता; पक्ष और परिप्रेक्ष्य; राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण **2019**, पृष्ठ **77**
17. कात्यायनी- इस पौरूषपूर्ण समय में; परिकल्पना प्रकाशन लखनऊ, प्रथम (परिकल्पना) संस्करण **2018**, पृष्ठ **79**